अेकांकी
आपणौ खास आदमी

बैजनाथ पंवार

लेखक–परिचै

बैजनाथ पंवार रौ जनम वि. सं. 1981, सावण बदि 7 नै रतननगर (चूरू) में हुयौ। आप इंटरमीडिएट री शिक्षा पास करी अर 'साहित्य रत्न' री उपाधि लीवी। आप महाराणा प्रताप विद्यापीठ संस्थान, श्रीडूंगरगढ़ रा व्यवस्थापक रैया। आप लगोलग राजस्थानी अर हिन्दी में साहित्य साधना करता रैया। आपरी छप्योड़ी कृतियां में 'अकल बिना ऊँट ऊभाणौ', 'लाडेसर' अर 'नैणां खूट्यौ नीर' अर 'खुलौ चरै, बंध्यौ मरै' (कहाणी–संग्रै) खास रूप सूं गिणी जा सकै। इणरै अलावा हिन्दी रचनावां में 'नींव के पत्थर', 'पारीक जाति का संक्षिप्त इतिहास' प्रमुख है। आप केई स्मारिकावां अर पत्रिकावां रौ ई संपादन कर्‌यौ। आपरी केई रचनावां रौ प्रसारण आकाशवाणी सूं हुयौ। इण साहित्य–साधना रै वास्तै आपनै केई पुरस्कार अर सम्मान मिळ्या।

पाठ–परिचै

'आपणौ खास आदमी' राजस्थानी अेकांकी परम्परा री महताऊ रचना है। इण अेकांकी में आज री प्रशासनिक व्यवस्था माथै व्यंग्य करीज्यौ है, जठै हरेक आदमी आपरौ काम कढावण रै वास्तै न्यारी–न्यारी सिफारिसां करावै अर लोग सिफारिस करै। सिफारिस रै दबाव सूं सही काम नीं हुवै अर गलत आदमी फायदौ उठाय लेवै। काम करणवाळा अफसरां अर लोगां रै वास्तै काम नै पार लगावणौ घणौ मुस्किल हुय जावै अर नीं चावतां भी गलत काम करणौ पड़ै। इण अेकांकी में इण व्यवस्था रौ दरसाव तौ हुयौ है, पण अेकांकीकार आ बात सिद्ध करणी चावै कै जे कोई हिम्मत करै तौ इण व्यवस्था में सुधार हुय सकै अर सिफारिस नीं मान्यां, न्याय मिळ सकै अर सही आदमी नै न्याय मिळ सकै। इण अेकांकी में हेम बाबू कनै अेक पद री भरती सारू न्यारा–न्यारा लोगां री सिफारिस आवै जिण में उणरी लुगाई भी है, पण वौ हिम्मत दिखावतां सही उम्मीदवार री भरती करै अर आपरी ईमानदारी नै बणायी राखै। अेकांकीकार इण बात नै इज सिद्ध करणी चावै कै लोग आपरौ आत्मविस्वास बणायौ राखै अर साच रौ साथ देवै, जिणसूं अव्यवस्था नै मिटायी जा सकै है।

आपणौ खास आदमी

पात्र

हेम बाबू : काम दिराऊ मैकमै रा अेक अफसर
सरोज : हेम बाबू री लुगाई
बाबूराम : हेम बाबू रौ संगळियौ
चौखटानंद : अेक नेता
रामू : अेक बी.अे. पास बेकार
(चपड़ासी, उम्मेदवार वगैरा)

पैलौ दरसाव

(सुबै री टैम हेम बाबू आपरै घर में बैठा रेडियौ सुणै है। अेक पसवाड़ै वांरौ अेक टाबर मिनकी सूं किलोळां करै है। दूजी कांनी सरोज पोथी रा पानड़ा उथेळै। इत्तै में फोन री घंटी बाजै। हेम बाबू रिसीवर उठा'र कान सूं लगावै।)

हेम बाबू : हां, हां, म्हैं हेम बाबू बोलूं हूं। कुण बाबू राम? अरे भाई, कांई हाल–चाल है? ....? ....हां, वौ तौ है ई। बोलौ कीकर याद फरमाई? म्हारै लायक कोई सेवा–चाकरी हुवै तौ बोलौ। (सुण नै) हां, हां, बोल भाई! थारौ काम तौ करणौ ई पड़सी। भेळा रमियोड़ा लंगोटिया यार हां। हं हं हं (हंसै पछै ध्यान सूं सुण नै) हां.... ठीक–ठीक.... नहीं, नहीं, भूल कीकर (जाऽऊं) भाई! म्हनै याद है। अच्छा, नमस्ते (रिसीवर धर दै।)

सरोज : कांई बात है?

हेम : बात कांई होवै, आ'ई सिफारस री बात है। आज इंस्पैक्टर री इंटरव्यू है क? कैवै कै सोवन नै भेजूं हूं जकौ ध्यान राखजौ। म्हारौ खास आदमी है। हमै म्हैं किणरौ ध्यान राखूं। रावळी घोड़ी अर सौ असवार।

सरोज : तौ कांई व्है? मोटा अफसर हौ। आपरै आदमी रौ मतळब पूरौ करणौ ई चाईजै।

हेम : पण म्हैं अब किणनै राजी राखूं नै किणनै बेराजी? अेक पैठौ, नौ लगवाळ वाळी बात व्है रैयी है। जगा तौ अेक अर खसम सौ। (भळै फोन री घंटी बाजै। रिसीवर उठावै नै बात करै) हलौ! हां, म्हैं हेम बोल रैयौ हूं। ....अच्छा विमल! बोल भाई, कांई बात है? आज यूं सुदियौ–सुदियौ कीकर है? हैं? अरे, इसी कांई बात व्हैगी? (फेर सुणै) हां.... हां.... पण भाई विमल! बात आ है कै जगा तौ है अेक नै उम्मेदवार है घणा। हमै म्हैं किणनै लूं नै किणनै छोडूं? थूं ई बता। (सुण नै) है?....खैर, देखूंला। (रिसीवर धर देवै)

सरोज : औ किणरै वास्तै कैवै है?

हेम : अरे बाबा, वो पेसगार रौ छोरौ है क? उणरै वास्तै कै रैयौ है। कैवै कै दो दिनां सूं म्हारा कान खा रैयौ है कै म्हारी सिफारस कर दौ।

सरोज : आई तौ कैऊं कै इंटरव्यू कांई औ तौ जीव रौ अेक जंजाळ हूयगौ। आं सिफारस्यां रै आगै तौ जान री ध्यारी मंडगी। (ऊठनै) लौ हमै निपट लूं नीं तौ मोड़ौ हुय जासी। (जावै)।

(पड़दौ पड़ै)

दूजौ दरसाव

(हेम बाबू आपरै दफ्तर में बैठा उम्मेदवारां री दरखास्तां फरैळै है। इत्तै में चपड़ासी अेक पुरजी लाय'र देवै। पुरजी बांचै। चपड़ासी नै बारै ऊभै मिनख नै भीतर बुलावण री सैन करै। अेक खद्दरधारी हाथ में झोळौ लियां मांय बड़ै।)

हेम बाबू : (ऊभौ व्हैनै) औ हौ! आप! पधारौ सा, नेताजी! आज धिन घड़ी धिन भाग जिकौ घरै बैठां ई

दरसण व्हैगा। फरमावौ, कीकर पधारणौ हुवौ (कुरसी कांनी सैन कर'र) बिराजौ सा।

चौखटा : (कुरसी पर बैठनै) म्हैं तौ अठै नैड़ै वाळै दफ्तर में आयौ हौ। सोच्यौ चालतौ बाबूजी री हाजरी भी बजातौ चालूं। हौ तौ मजै में?

हेम : हां सा। नेतावां री किरपा चाईजै। पछै किण बात रौ डर? पांचूं घी में अर सिर कड़ाई में।

चोखटा : हां तौ साब, अेक इंटरव्यू सुणियौ हौ। कद तांई हुवैला?

हेम : वौ तौ आगली पैली तारीख नै हुसी। क्यूं कांई बात है?

चौखटा : औई थोड़ौ खयाल राखजौ। म्हारै साळै रौ बेटौ मोवनौ भी इंटरव्यू में आवैला। आप घर रा ई आदमी हौ, आपनै कांई कैवां। थोड़ौ ध्यान राखजौ। आपणौ खास आदमी है।

हेम : ठीक सा। और कोई हुकम चाकरी?

चौखटा : बस मौज है। तौ सीख करूं? अेक मीटिंग में जावणौ है। हां तौ आप भूल मत जाइजौ। आपणौ खास आदमी है। (कैवतो–कैवतौ जावै)।

हेम : (अपणै आप) औ इंटरव्यू कांई हुवौ, जान रौ झगड़ौ मंडग्यौ। म्हैं अबै कूवै में पड़ूं कै खाड में? कंथौ अेक, परदेस घणा वाळी बात होय रैयी है। (इत्तै में फोन री घंटी बाजै नै हेम बाबू रिसीवर उठायनै कान सूं लगावै।)

हेम : हलौ! हां... हां... म्हैं ई हेम बाबू हूं। फरमावौ। कुण? मंत्रीजी रा पी.अे. साब? हां.... हां.... फरमावौ कांई हुकम है? ....इंटरव्यू तौ पैली तारीख नै हुवैला। बोलौ कांई करणौ है?

हेम : (बात सुणनै) ठीक है सा। ध्यान राखसूं.... पण साब जगा तौ अेक है अर उम्मेदवार.... हां, हां.... वा तौ है ई सा.... म्हारौ मतळब औ नहीं है। मिनिस्टर साब रौ हुकम सिर आंख्यां माथै। ....हां हां.... हां, इत्तौ तौ म्हैं ई समझूं हूं सा। पण आप भी ओखाणौ नामी सुणायौ कै ध्यान नीं राखियौ तौ घर घोसियां रा बळैला पण सुखी तौ ऊंदरा ई कोनी हुवै। ठीक सा, ऊंदरां नै जीवणौ हुसी तौ मिनिस्टर साब रौ खास आदमी ईज लिरीजसी। (रिसीवर धरै)।

(पड़दौ पड़ै)

तीजौ दरसाव

(हेम बाबू री रसोई। हेम बाबू रौ मूंडौ उतरियोड़ौ है। अळसायोड़ी आंख्यां, थाकोड़ौ सरीर। होळै–होळै रोटी रा कौर उगाळै है। सरोज कनै बैठी जिमावै। हेम बाबू री उदासी देख'र सरोज कैवै।)

सरोज : आज कांई बात है? इत्ती उदासी कीकर? दफ्तर में घणौ काम रैवै है कांई? यूं जान दे'र कमाई कियोड़ी किण काम री?

हेम : खैर अै तौ जीवतै जी रै यूं ई झगड़ा लाग्या रैसी। आज थारै पी'र सूं कागद आयौ जिण में कांई लिखियौ है?

सरोज : काकोजी लिखियौ है कै पैली तारीख नै जकौ इंटरव्यू हौ रैयौ है, उण में आपणै अेक खास आदमी नै भूजूं हूं, सो लै लीजौ।

बौत भलौ अर हुंस्यार आदमी है।

हेम : पण जगा तौ अेक ई है। थूं कांई जाणै कोनी। कित्ता आदमी लारै पड़ रैया है।

सरोज : जकौ कांई व्है, बैठा रैई दूजा। पैली घरका नै लौ। घर रा पूत कंवारा डोलै, पाड़ोसी रा फेरा। आ कठै री रीत है? काकोजी कांई थांनै बार–बार लिखैला? औ तौ कोई इस्योई मौकौ आयग्यौ है।

हेम : थूं गैली बात कीकर करै? म्हैं मिनिस्टर साब री बात राखूं कै थारै काकोजी री?

सरोज : (रीस में आ'र) तौ मिनिस्टर कोई म्हासूं लांठौ है? दूजा सारा बैठा रैवैला। काकोजी रौ आदमी पैली लागणौ चाईजै।

हेम : तौ थे म्हनै डरा'र काम बणावणौ चावौ हौ कांई?

सरोज : (ठरकै सूं) हां, औ काम होणौ ईज चाईजै। म्हारै पी'र में मां–बाप नीं, भाई–बैन नीं। अेक बापड़ा काकोजी म्हनै पाळ–पोस'र परणाई मुकळाई; अर आज उणां रौ अेक जरा सो काम नीं करौला तौ म्हैं वांनै भळै कीकर मूंडौ दिखाऊंला।

(चपड़ासी आवै)

चपड़ासी : बारै अेक छोरौ ऊभौ आपरी बाट जोवै है। कांई कैऊं?

हेम : जा कैयदै कै अबार जीम'र आऊं हूं। ठा'नीं बापड़ौ कोई कित्ता सुगन साज'र आयौ हुवैला। (चपड़ासी जावै)

सरोज : हां, तौ म्हैं काकोजी नै कांई लिखूं? कांई कैवौ हौ?

हेम : (जावतां–जावतां) ठीक है। म्हैं विचार करूंला। अेकर वांनै कीं मत लिख। भळै म्हैं लिख दूंला। (आपै ई बरड़ावतौ जावै) और तौ बैरी हुवा सो हुवा, अब तौ घरवाळी ई स्यान लेवण नै त्यार हूगी। खैर, देखी जावैला।

चौथौ दरसाव

(हेम बाबू री बारली बैठक। रात रा आठ बजियां री टैम। बैठक रै अेक खूणै में भेळौ हुयोड़ौ ओळा मारयोड़ी कमेड़ी रै दांई रामू बैठौ है। मूंडै पर अेक'र आसा री चिमक दीखै तौ बीजै खण निरासा री काळस। हेम बाबू नै आवतां देख'र ऊभौ हुवै।)

रामू : नमस्कार! बाबूजी।

हेम : आव भाई! कांई काम आवणौ हुवौ? कांई नाम थारौ?

रामू : सा, म्हारौ नाम रामलाल है। पैली तारीख नै होवण वाळै इंटरव्यू रौ उम्मेदवार हूं। बी.अे. पास हूं। पण किणी री सिफारस नीं हुवण सूं आज तांई बेकार फिरूं हूं। म्हारै तौ आप री ई सिफारस है। (कैवतौ–कैवतौ गळगळौ हू जावै)

हेम : तौ भाई, किणी लांठै मिनख री सिफारस कोनी कांई?

रामू : नीं साब।

हेम : (गैरी निसांस न्हाक नै) ठीक है, ध्यान में राखसूं। और कांई काम है? हां, म्हैं तौ पूछणौ ई भूलग्यौ, तूं जीम्यौ कै नहीं?

रामू : (सरमावतौ–सरमावतौ) नहीं सा।

हेम : (चपड़ासी नै हेलौ पाड़ै) अरे भई, ईं लड़कै नै जिमायनै सुवा देई।

चपड़ासी : ठीक सा।

(हेम बाबू घर में जावणौ चावै। इत्तै में अेक डैण लाठी टेकतौ–टेकतौ–टैकतौ आ'र कागद देवै। हेम बाबू डैण नै ध्यान सूं देखता–देखता कागद खोल'र बांचै।)

हेम : (कागद सूं) चिरू हेम, सेती लिखी चाड़वास सूं भूवाजी री आसीस बांचजौ। अपरंच कागद लावण वाळौ औ आपणौ खास आदमी है। इण रौ बेटौ बी.अे. पास है। थां घणा मोटा अफसर हौ सौ इणरै बेटै री कोई ऊंचै ओहदै पर नौकरी लगा देवोला। औ आपणौ खास आदमी है अर हूं थांनै बरियां–बरियां को लिखूंला नीं।

(कागद बांचतां–बांचतां हाथ सूं छूट जावै।)

पांचवौ दरसाव

(हेम बाबू रौ दफ्तर। दिन री दो बजियां री टैम। दफ्तर रै आगै इंटरव्यू होवणै रै बाद उम्मेदवारां री भीड़ परिणाम सुणण रै खातर खड़ी है। दफ्तर में हेम बाबू अर्जियां रौ ढिग लियां बैठा है। दरवाजै कनै चपड़ासी ऊभौ है।)

हेम : (अपणै आप) औ आपणौ खास आदमी है। आखा लोग सिफारस करै– औ आपणौ खास आदमी है। (तेजी सूं आय'र) तौ म्हैं भी खास आदमी हूं। म्हैं किणी री सिफारस नीं मानूंला। जे दूजां री सिफारस मानूं तौ म्हैं मर जाऊंला। म्हारी आतमा मर जावैला। दूजा म्हारै माथै छा जावैला। नहीं; म्हैं मरणौ नहीं, जीवणौ चावूं हूं। बिना किणी रै डर अर दबाव रै म्हैं अपणी आतमा रौ फैसलौ देऊंला। आज म्हनै कीं रौ भी डर नहीं है। आज म्हारी आतमा आजाद है। नीं तौ म्हैं सत्ता सूं डरूंला, नीं सगा–संबंधियां सूं। साचै अधिकारी नै मौकौ दूंला। चायै म्हारी नौकरी रैवै चायै जावै। (घंटी बजा'र)

हेम : चपड़ासी!

चपड़ासी : (आवै) हुकम सा'ब।

हेम : जा'र बारै बैठा सरदार बोधासिंह, भीखाराम, डूंगरसिंह और रामलाल उम्मेदवारां नै बुला ला।

(सारा सिफारसी 5 उम्मेदवार आवै)

हेम : (अरजियां लेय–लेयनै अेक कांनी न्हाखता थकां) सिफारसी टट्टूवां री अरजी खारज! नेताजी अर मिनिस्टरां री सिफारस खारज! भाई–भतीजां री सिफारस खारज! साचौ ईमानदार रामलाल इंटरव्यू में पास। जावौ, भाग जावौ।

(उम्मेदवार बारै जावता–जावता बोलै)

एक उम्मे. : रिस्वत खाग्यौ।

दूजौ : बेईमान है।

तीजौ : अब देखसां ईं कुरसी माथै कित्ता दिन रैवै?

चौथौ : अरे म्हैं इणनै बरखास्त करायनै छोडूंला।

(सगळा मिळनै नारौ लगावै– "रिस्वतखोर अफसर रौ, नास हौ", "हेम बाबू, मुड़दाबाद!")

(दफ्तर रै अंदर सूं हंसणै री आवाज आवै।)

(पड़दौ पड़ै)

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

किलोळा=रम्मत। याद फरमाई=याद करणौ। खसम=धणी। ओखाणौ=कहावत, लोकोक्ति। घरकां=घरवाळा। लांठौ=ताकतवर। बरियां–बरियां=केई बार। खारज=रद्द।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. हेम बाबू किस्यै मैकमै रौ अफसर है?
   (अ) फौज रौ (ब) रेलवै रौ
   (स) काम दिराऊ मैकमै रौ (द) वित्त विभाग रौ
   ( )

2. अेकांकी में आया नेताजी रौ कांई नाम है?
   (अ) राम बाबू (ब) चौखटानंद
   (स) हेम बाबू (द) रामू
   ( )

3. सरोज रै पी'र सूं कागद कुण लिख्यौ?
   (अ) मामोजी (ब) बाबूजी
   (स) काकोजी (द) फूंफोजी
   ( )

4. 'इंटरव्यू' में पास कुण हुयौ?
   (अ) मोहन (ब) भीखाराम
   (स) डूंगरसिंह (द) रामलाल
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. हेम बाबू किस्यै मैकमै रौ अफसर हौ?
2. हेम बाबू किस्यै पद री भरती करी?
3. चौखटानंद किणरी सिफारिस करी?
4. रामलाल कित्तौ पढ्योड़ौ हौ?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. इण अेकांकी में किस्यै मैकमै रौ वरणाव है?
2. हेम बाबू रै कनै किण–किण री सिफारिस आयी?
3. सरोज आपरा काकोजी री सिफारस मानण री बात क्यूं कैयी?
4. हेम बाबू किणनै अर क्यूं नौकरी दीन्ही।

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'आपणौ खास आदमी' अेकांकी रै उद्देस्य नै विगतवार समझावौ।
2. 'आपणौ खास आदमी' अेकांकी री अेकांकी रा तत्त्वां माथै समीक्षा करौ।
3. 'आपणौ खास आदमी' अेकांकी रै मुख्य पात्र हेम बाबू रै चरित्र री विसेसतावां नै समझावौ।
4. 'नाटक' अर 'अेकांकी' विधा रौ अरथ समझावतां थकां आं दोन्यां रौ आंतरौ समझावौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

   ''म्हैं किणी री सिफारस नीं मानूंला। जे दूजां री सिफारस मानूं तौ म्हैं मर जाऊंला। म्हारी आतमा मर जावैला। दूजा म्हारै माथै छा जावैला। नहीं; म्हैं मरणौ नहीं, जीवणौ चावूं हूं। बिना किणी रै डर अर दबाव रै म्हैं अपणी आतमा रौ फैसलौ देऊंला। आज म्हनै कीं रौ भी डर नहीं है। आज म्हारी आतमा आजाद है। नीं तौ म्हैं सत्ता सूं डरूंला, नीं सगा–संबंधियां सूं। साचै अधिकारी नै मौकौ दूंला। चायै म्हारी नौकरी रैवै चायै जावै।''

65

अेकांकी
देसभगत भामासा

डॉ. आज्ञाचंद भंडारी

लेखक–परिचै

डॉ. आज्ञाचंद भंडारी रौ जनम वि. संवत् 1978 नै जोधपुर में होयौ। मैट्रिक परीक्षा पास करनै आप रेलवे में नौकरी करली। नौकरी करता थकां आप लेखण सूं लगोलग जुड़िया रैया। आप इणी लगन अर मैणत रै बळ हिन्दी अर अंग्रेजी में अेम. अे. करी। सोध रै खेतर में आपरी गैरी रुचि रैयी जिणरै त्हैत आप जोधपुर विश्वविद्यालय सूं 'राजस्थान का सगुण भक्तिकाव्य' विसय माथै पीअेच.डी. री उपाधि हासल करी। भंडारी हिन्दी, राजस्थानी अर अंग्रेजी रा कुसल लिखारा हा। राजस्थानी रै नाटक अर अेकांकी खेतर नै आपरी विसेस देन रैयी। 'पन्नाधाय' नांव सूं आपरौ अेक राजस्थानी नाटक प्रकासित हुयौ। 'देस रै वास्तै' आपरौ अेक अेकांकी–संग्रै ई छपियौ, जिणमें पांच अेकांकियां है। अंग्रेजी में ई आपरी दो पोथ्यां छप्योड़ी है।

पाठ–परिचै

औ अेकांकी 'राजस्थानी अेकांकी' संग्रै सूं लियोड़ौ है। इणमें लेखक महाराणा प्रताप रै दीवाण भामासा री देसभगती अर त्याग रौ प्रेरणादायी चित्र अंकित करियौ है। महाराणा प्रताप आपरै कनै धन अर सिपाही कम व्हैण रै कारण मेवाड़ छोड'र सिंध परदेस कांनी जावण रौ निस्चै करै। मेवाड़ रा दीवान भामासा आपरौ खजानौ मेवाड़ री रिछ्या खातर महाराणा प्रताप नै सूंप देवै, जिणसूं महाराणा आपरी सेना रौ गठन कर मुगलां सूं जुद्ध जारी राखै अर मेवाड़ नै आजीवण आजाद राखै। प्रताप रै त्याग अर बळिदान रै साथै देसभगत भामासा रै चरित्त नै इण अेकांकी में उजागर करीज्यौ है।

देसभगत भामासा

पात्र

महाराणा प्रताप
अमरसिंघ
भील सिरदार
भामासा
चार सिरदार

जग्यां : भाखरां रै बीच में
समै : परभात
मियाद : बीस मिनट
साधन : तलवार, तीर–कबाण, सोनै चांदी सूं भरियोड़ी चार रख्खियां
सैटिंग : जंगळ नै भाखर

पैलौ दरसाव

(भाखरां रै बीच में महाराणा प्रताप मूंडौ उतारयां बैठा है। पाखती बाळक अमरसिंघ बैठौ–बैठौ आंसू पाड़ै है।)

प्रताप : अमर...!
अमर : हुकम दाता!
प्रताप : यूं आंसू क्यूं ढाळै बेटा?
अमर : काठी भूख लागी है दाता! अबै तौ भूख नीं सैयीजै।
प्रताप : चित्तौड़ रौ मेवाड़ी राजकंवर, यूं भूख सूं डरै?
अमर : नीं दाता! म्हैं भूख सूं नीं डरूं, पण...
प्रताप : कालै रात रा थारा बूसा अेक रोटी ढकनै राखी ही, वा कठै गई?
अमर : वा रोटी तौ मिनकौ लेग्यौ दाता! म्हैं नै बूसा मिनका नै काढण री घणी कोसीस करी, पण सेवट रोटी उठानै ले ईज गयौ।
प्रताप : (गंभीर बणनै) हूं...
अमर : हां, जरै ई तौ हाल तक म्हैं भूखौ हूं।
प्रताप : खैर, कीं बात नीं बेटा! कालै रात रा तौ रोटी खाईज ही कै?
अमर : हां दाता! कालै तौ म्हैं आधी रोटी तौ खाई ही।
प्रताप : जैड़ी इकलिंग जी री मरजी। थूं कालै आधी रोटी तौ खाई ही, पण म्हैं नै थारा बू'सा कितरा दिनां रा भूखा हां। ठा है थनै?
अमर : हां दाता! म्हनै सैंग ठा है। आप चार दिनां रा भूखा हौ। (थोडी देर चुप रैवै) दाता! आखती–पाखती जायनै सोधूं, कठैई फळ–फूल कै कंदमूळ मिळ जावै तौ?
प्रताप : जा बेटा, जा.. भाग भरोसै... (अमरसिंघ जावै। प्रताप उदास मन, मूंडौ लटकायां विचार करता हुवै ज्यूं बैठा है। थोड़ी देर पछै)
प्रताप : हे भगवान! कैड़ौ बिखौ न्हाखियौ है? टाबर भूखां मरै। औ म्हासूं कीकर देखीजै? (थोड़ी देर चुप रैवै) तुरकां रौ अबार सामनौ कर सकूं जकी जचै कोनी। जे म्हैं अठै ईज रैऊं तौ उणरा सिरदार म्हनै अठै जक नीं लेवण दै।... किणी तरै सूं जे म्हैं अकबर रै राज री सींव सूं बारै निकळ जाऊं तौ थोड़ीक चैन मिळै नै जुद्ध रौ सावळ बिचार कर भी सकूं। पण... पण कठै जाऊं? (लिलाड़ माथै हाथ फेरै नै विचार करै) अरे! हां, ठीक याद आयौ। सिंध नदी रै कांठै सिंधियां रै राज में जाऊं परौ। (भील सरदार नै सेरू भील आवै)
सिरदार : जै हो मेवाड़ रा धणी री।
प्रताप : ओ! भील सिरदार, आवौ–आवौ!
सिरदार : महाराणा! आज आप किण विचार में उळझियोड़ा बिराजिया हौ?
प्रताप : दूजौ कंई विचारूं? अबै म्हारौ अठै घणौ ठैरणौ दोरौ ई है।
सिरदार : क्यूं? बस... हिम्मत हरा दिरावोला कंई, महाराणा?
प्रताप : हिम्मत हारण रौ सवाल नहीं है, सिरदार! अठै रैयनै इण बखत मुगलां रौ सामनौ कर सकूं, अैड़ी औकात अबार म्हारी नीं है।

सेरू : बात तौ साची फुरमावौ हौ, महाराणा।

प्रताप : नै फेर इण नैना–सा बाळकिया नै दो–दो दिन तक भूखौ रैवणौ पड़ै।

सिरदार : आप भी तौ चार दिनां सूं कीं नीं अरोगिया हौ, अन्नदाता!

प्रताप : (बात टाळनै) सिरदार! अैड़ी सुरगां जैड़ी जलमभोम छोडतां म्हारौ हिवड़ौ फाटै। जिकी जलमभोम म्हारी पाळण पोसण कियौ, जिणरी सुतंतरता रै खातर म्हैं इतरौ लड़ियौ, इतरा दुख भोगिया, उण जलमभोम नै अैड़ा दुखां में छोडनै जावतां म्हारौ काळजौ टुकड़ा–टुकड़ा हुवै। (आंसू टपकै)

सिरदार : पण कियौ कंई जावै, अन्नदाता! इण सिवाय कोई दूजौ उपाय भी तौ नीं दीसै।

सेरू : महाराणा! म्हैं आपनै अेकला नीं जावण दूं। म्हैं भी आपरै साथै चालूंला।

प्रताप : नीं बीरा, नीं। जे थूं म्हारै साथै चालैला परौ, तौ पछै अठारा संदेसा म्हनै कुण भेजैला?

सेरू : क्यूं? सिरदार तौ अठै ईज है।

प्रताप : भाई! माडांणी दुख क्यूं झेलै? थूं सिरदार रै साथै ईज रै, सिरदार नै मदद मिळैला।

सिरदार : अन्नदाता! म्हारै किणी तरै री मदद नीं चाईजै। औ आपरै साथै रैवैला तौ सा'रौ ईज लागैला।

सेरू : सिरदार ठीक कैवै, अन्नदाता।

प्रताप : वा जणै, यूं ईज करौ कै औ म्हारै साथै चालै नै...

सिरदार : म्हैं अठै ईज रैऊं।

प्रताप : हां। जलमभोम! मां, थनै छेहला प्रणाम! (हाथ जोड़ै) मां! थांनै अैड़ा बिखा में छोडतां म्हारौ काळजौ चीरीजै है। पण कंई करूं मां! थनै इण विपदा सूं छुटकारौ दिरावण रै खातर ईज जाऊं हूं। मां! थनै बंदवूं, लाख–लाख प्रणाम! (आंख्यां मांय सूं आंसू री लड़ियां बैवै।)

सेरू : (अेकदम, लिलाड़ माथै हाथ धरनै आघी आती चीज देखतौ व्है ज्यूं) महाराणा! वौ उठीनै आघौ थकौ कोई घुड़सवार आवतौ दीखै।

सिरदार : (देखनै) हां महाराणा, घोड़ौ अठीनै ईज सरपट आवतौ दीखै।

सेरू : अबै तौ असवार साव नैड़ौ आयग्यौ है।

प्रताप : अरे! अै तौ भामासा है। सागै चार सिरदार भी है। (भामासा चार सिरदारां रै साथै आवै। चारां रै खंवां माथै चार भारी भरकम रख्खियां लटकै है।)

प्रताप : आवौ, भामासा! आवौ (भामासा हाथ जोड़ै।)

भामासा : घणी खम्मा, अन्दाता! जै इकलिंग जी री! जै हौ मेवाड़ रा धणी री!

प्रताप : जै इकलिंग जी री! अबार इण बखत नै अठै कीकर आवणौ हुवौ साह जी?

भामासा : आपरै चरणां में ईज हाजर हुवौ हूं, बापजी!

प्रताप : बोलौ, बोलौ, म्हारै लायक...

भामासा : महाराणा! म्हैं सुणियौ है कै आप मेवाड़ छोडनै पधार रया हौ! कंई आ बात साची है?

प्रताप : हां भामासा! आ बात साव साची है। अबै म्हनै मेवाड़ रौ त्याग करणौ ईज पड़ैला।

भामासा : पण क्यूं? इण में मेवाड़ री नाक जावै, महाराणा!

प्रताप : साह जी! आज तक म्हैं घणी ई हिम्मत राखी। अबै पण म्हारै कनै नीं तौ धन है नै नीं सिपाही...

भामासा : आपरै बिना मेवाड़ अनाथ व्है जावैला, अन्दाता!

प्रताप : भामासा! उण अकबर नै तौ बापा रावळ रै वंस री इज्जत लेवण सूं मतळब है। थांनै इणमें कंई? थे तौ आणंद सूं रैवौ।

भामासा : कैड़ी कड़वी बात फुरमायदी, अन्नदाता। रूंख री जड़ काटियां पछै डाळ साबती रैवै? आप तौ यूं दुख भोगनै फिरता फिरौ नै म्हे आणंद री बंसी बजावां? औ आछौ लागै? म्हे कि'या मूंडा सूं सुख भोगां?

प्रताप : पण इणमें अेतराज कांई है, भामासा?

भामासा : अेतराज? इण सूं मोटौ अेतराज फेर कंई हू सकै, कै मेवाड़ री आन, मान नै मरजाद रौ रूखाळौ घर छोडनै दर–दर भटकै नै म्हे अठै तुरकां री पगथळियां चाटनै जिन्दगी बितावां? अैड़ा जीवणा बिचै तौ मरणौ चोखौ। म्हारी अेक अरज मानोला, म्हारा धणी!

प्रताप : आ कंई को साहजी? थांरी कोई भी बात म्हैं आज तक टाळी है?

भामासा : (रख्खियां धरनै) तौ महाराणा! औ धन आपरै चरणां में अरपण करूं, इणनै अंगेजौ।

प्रताप : आ कीकर हू सकै, दीवाणां? थांरी सेवा रै बदळै म्हारै हाथ सूं ईज दियोड़ौ धन इणी'ज हाथ सूं पाछौ लेऊं? आ नीं हू सकै।

भामासा : महाराणा! मेवाड़ री धरती आपरी अेकलां री नीं है, म्हारी भी जलमभोम है। औ धन आपनै नीं, जलमभोम नै अरपण करूं हूं। जलमभोम री मुगती नै रिच्छा रै खातर जे म्हारौ धन काम में नहीं आवै तौ अैड़ा धन नै राखनै म्हैं कंई करूं? धूड़ बराबर है।

प्रताप : (आंख्यां गळगळी करता) भामासा! म्हारा व्हाला दीवाण...

भामासा : नीं महाराणा जी! आप अबै ना नीं कर सकौ। आप वचन दियौ है। यां रख्खियां में इतरौ धन है कै पचीस हजार सिपायां रौ खरचौ बारह बरस तक चाल सकै। आपनै लेवणौ ईज पड़ैला।

प्रताप : भामासा! थे नीं मानौ। म्हनै औ धन साचमाच लेवणौ ईज पड़ैला। धिन है उण कोख नै जिणमें थे जलम लियौ। थांरौ औ त्याग जगत में अमर रैवैला। (ऊभा हुय'र बाथ भरनै भेंटै।)

भामासा : इणनै आप त्याग कैवौ अन्दाता? हरगिज नीं! औ त्याग बिल्कुल नीं है। अैड़ौ कपूत नै नीच इण संसार में कुण हुवैला जिकौ मां जलमभोम री रिच्छा रै खातर, मुगती रै खातर भी धन नीं देवै नै दौलत नै सैंठी करनै राखै?

प्रताप : (गळगळौ व्हेनै) म्हारै कनै कीं नीं है; दो बोल भी नीं है। किण विध थांरै गुणां रौ बखाण करूं?

भामासा : म्हारा मालक! अबै पाछा मुड़ौ नै म्हारी मां री बेड़ियां तोड़ण रा सरतन करावौ।

सरदार : महाराणा! पाछा मुड़ौ! भामासा रा इण त्याग सूं मेवाड़ जीत नै दिखावौ।

सगळा : धिन है भामासा! थांरी छाती नै धिन है।

सिरदार : महाराणा! जठै तक भारत री धरती माथै अैड़ा नर–रतन ऊभा पगां है, उठै तक अपांणी सुतन्तरता सांम्ही कोई करड़ी निजर सूं देख भी नीं सकै।

प्रताप : खरी बात है।

सगळा : धिन है देस–भगत भामासा नै! धिन है त्यागी भामासा!

(पड़दौ पड़ै)

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भाखर=पहाड़। पाखती=नैड़ौ, कनै बू'सा=माता। ठा=खबर। सोधूं=खोजूं। मूंडौ लटकायां=उदास होय'र। बिखो=दुख, विपत्ति। जक=चैन, आराम। सींव=सीमा, हद। कांठै=किनारे। औकात=बिसात, हिम्मत, सामरथ। माडांणी=जबरन। सा'रौ=सहारौ। छेहला=अंतिम, आखरी। कोथळी=थैली। नाक=इज्जत, प्रतिष्ठा। पगथळियां चाट चाटनै=गुलामी कर–करनै अंगैजो=अंगीकार करौ। वाल्हा–प्रिय। दीवाण=प्रधानमंत्री। सैंठी कर नै राखै=मजबूती सूं पकड़ राखै, खरच नीं करै। सरतन=उपाय, जतन। उभा पगां=पगां पर खड़ा है, हाजर है।

सवाल

विकळपाऊ पडूतर वाळा सवाल

1. 'अबार सामनौ कर सकूं, जकी जचै कोनी।' नीं जचण रौ कारण हौ–
   (अ) अमर नै भूखौ देख वै निरास हुयग्या
   (ब) सत्रु रा सैनिक उणानै चैन नीं लेवण देवता
   (स) सत्रु नै जबरौ देख वै हिम्मत हारग्या
   (द) परताप कनै नीं धन हौ अर नीं सिपाही

   ( )

2. प्रताप जलमभोम नै छोड'र क्यूं जावणौ चावता?
   (अ) लड़ता–लड़ता थाकग्या
   (ब) खावण–पीवण री कमी हुयगी
   (स) अकबर संधि करण नै राजी हुयग्यौ
   (द) जलमभोम नै विपदा सूं छूटकारौ दिरावण खातर

   ( )

3. 'अैड़ा धन नै राखनै म्है कंई करूं? धूड़ बराबर है।' किसौ धन धूड़ बराबर है?
   (अ) जो मैनत नीं कर कमायौ जावै
   (ब) जो कंजूसी कर बचायौ जावै
   (स) जो देस रै काम नीं आवै
   (द) जो खुद रै काम नीं आवै

   ( )

4. 'इणनै आप त्याग कैवौ अंदाता। हरगिज नहीं। औ त्याग बिलकुल नीं है।'
   भामासा रौ पडूत्तर उणां रै चरित रा किसा गुण नै बतावै–
   (अ) उदारता
   (ब) देसभगति
   (स) अनासक्ति
   (द) नरमाई

   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. महाराणा प्रताप कठै रा शासक था?
2. प्रताप किण रै सांमी जुद्ध लड़ रह्या हा?
3. भामासा किण राज रा दीवान हा?
4. प्रताप किण रै राज में जावण रौ विचार कियौ?
5. 'नाक जावै' मुहावरे रौ अरथ लिखौ?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'कैड़ी कड़वी बात फुरमाय दी अन्दाता!' आ कड़वी बात किसी ही?
2. 'अैड़ा जीवण बिचै तो मरणो चोखौ।' किसा जीवण सूं मरणो चोखौ है?
3. 'थांरो ओ त्याग जगत में अमर रैवैला।' भामासा रो ओ त्याग किसो हो?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. अेकांकी रै आधार माथै महाराणा प्रताप री चरित्रगत विसेसतावां नै उजागर करौ?
2. 'थांरो ओ त्याग जगत में अमर रेवैला' इण कथन री विवेचना करौ?
3. अेकांकी रा मूल–तत्त्वां रै आधार माथै इण अेकांकी री समीक्षा करौ?
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–
   (अ) अैड़ा बिखा में छोड़तां म्हारौ काळजौ चिरीजै है। पण कांई करूं, मां। थनै इण बिपद सूं छुटकारौ दिरावण खातर ईज जाऊं हूं। मां। वंदवूं, लाख लाख परणाम। (आंखियां मांय सूं आंसू री लड़िया बै'वै)
   (ब) भामासा– अैतराज? इण सूं मोटो अैतराज फैर कांई हूं सकै, कै मेवाड़ री आन, मान नै मरजाद रौ रूखाळौ घर छोड़ नै दर–दर भटकै, नै म्है अठै तुरकां री पगथळियां चाट–चाट नै जिन्दगी बितावां? अैड़ा जीवणा बिचै तो मरणौ चोखौ।
   (स) धिन है भामासा। थांरी छाती नै धिन है। सिरदार– महाराणा। जठै तक भारत री धरती माथै अैड़ा नर–रतन ऊभा पगां है, उठै तक आपांणी सुतन्तरता सांम्ही कोई करड़ी निज़र सूं देख भी नीं सकै।